Department :- Ayurved Samhita & Siddhant

Topic :- पीलुपाक एवं पिठर पाक

पाक

"रूपादिचतुष्टयं पृथिव्यां पाकजमनित्यञ्च-
पाको नाम विजातीयतेज:संयोग:|"

अर्थात् रूप, रस, गंध तथा स्पर्श ये चारों गुण पृथ्वी में पाकजन्य होते हैं| विजातीय तेज के संयोग से पदार्थ के अन्दर इन चारों गुणों में जब परिवर्तन होता हैं, तो उसे पाक कहते हैं|

जैसे- मृदु व श्लक्षण द्रव्य का स्पर्श पाकोपरान्त कठिन व खर हो जाता हैं|

- इस पाक प्रक्रिया को न्याय व वैशेषिक दर्शन दोनों द्वारा स्वीकार किया गया हैं परन्तु दोनों में कुछ अंतर है|
- वैशेषिक दर्शन में पाक की प्रक्रिया परमाणु स्तर पर स्वीकार की गयी हैं, अत:इसे पीलुपाक कहा जाता है|
- न्याय दर्शन में पाक प्रक्रिया पिण्ड स्तर पर की जाती हैं, अत: इसे पिठर पाक कहा जाता है|

पीलुपाक

- पीलु शब्द का व्यवहार परमाणु के लिए किया जाता हैं, अत: पीलुपाक का तात्पर्य परमाणु पाक से है|

- पीलुपाक को वैशेषिक दर्शन ने माना है| इसमें किसी द्रव्य से अग्नि का संयोग होने पर द्रव्य के प्रत्येक अवयव में पृथक पृथक पाक होता है|

- पीलुपाक के सिद्धांत के अनुसार जब किसी द्रव्य से अग्नि संयोग होता है तो पाक की अवस्था में विभिन्न क्रियाएं होती हैं, जो निम्न है-

1. विघटन की अवस्था
2. पुन: संयोगावस्था

1. विघटन की अवस्था- जब द्रव्य से अग्निसंयोग होता है तो अग्नि से सर्वप्रथम परमाणुओ में सक्रियता आती है जिससे परमाणु इधर-उधर गति करने लगते हैं| इस गत्यात्मक प्रवृति के कारण संयुक्त परमाणुओं का विघटन होने लगता है| परमाणुओं के संयोग का नाश होने से उस द्रव्य का भी नाश हो जाता है| स्वतन्त्र हुए परमाणुओं का संयोग तेज के साथ होता है तथा प्रत्येक परमाणु में परिवर्तन होता है|

2. पुन:संयोगावस्था- जब परमाणुओं में स्वतन्त्र रूप से पाक प्रक्रिया पूर्ण होकर उनके स्पर्श, रूप, रस, गंधादि में परिवर्तन आ जाता है, तो पुन: उनमें सजातीय परमाणुओं की संयोग प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है| यह प्रक्रिया अदृश्य होती है| परमाणु संयोग कर द्वयणुक व त्र्यणुक के रूप में आकर नए द्रव्य को पुन: उत्पन्न कर देते हैं|

चरक संहिता में पीलुपाक

“भौमाप्याग्नेयवायव्या: पंचोष्माण: सनाभस:||
पंचाहारगुणान्स्वान्पार्थिवादीन्पचन्ति हि||
यथास्वं स्वं च पुष्णन्ति देहे द्रव्यगुणा: पृथक|
पार्थिवा: पार्थिवानेव शेषा: शेषान्श्च कृत्स्नश:||”

(च.चि.15/13-14)

आचार्य दृढबल ने आहार के पांचभौतिक रूप में पृथक पाक का तथा प्रत्येक घटकों के पृथक पृथक पाक का वर्णन कर परमाणु स्तर पर पाक प्रक्रिया या पीलुपाक का व्यवहारिक स्वरूप दिया है|

पिठर पाक

- पिठर पाक न्याय दर्शन द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत है|
- पिठर पाक के अनुसार किसी द्रव्य जिसका पाक होना है, उसके अन्दर बाहर समस्त अवयवों में अग्नि के संयोग से द्रव्य के पिण्ड स्वरूप में पाक होता है|
- इसके अनुसार पृथ्वी में स्थित सभी गुणों का पाक पिण्ड रूप में होता है|
- इस पाक में परमाणुओं में विघटन व पुनः संयोग की अवस्थायें नहीं होती है|

चरक संहिता में पिठर पाक

अन्नस्य भुक्तमात्रस्य षड्रसस्य प्रपाकतः|
मधुराद्यात् कफो भावात् फेनभूत उदीर्यते||९||
परं तु पच्यमानस्य विदग्धस्याम्लभावतः|
आशयाच्च्यवमानस्य पित्तमच्छमुदीर्यते||१०||
पक्वाशयं तु प्राप्तस्य शोष्यमाणस्य वह्निना|
परिपिण्डितपक्वस्य वायुः स्यात् कटुभावतः||११||

चरक संहिता में पिठर पाक

“सप्तभिर्देहधातारो धातवो द्विविधं पुनः|
यथास्वमग्निभिः पाकं यान्ति किट्टप्रसादवत्||”
(च.चि.15/157)

अर्थात् देह को धारण करने वाली धातुएं अपनी-अपनी अग्नि से किट्ट व प्रसाद रूप में दो प्रकार से पाक को प्राप्त करती हैं| क्षीर दधि न्याय के अनुसार धातु परिणमन पूर्णतः होता है|अर्थात् सम्पूर्ण रस धातु रक्त धातु में परिवर्तित हो जाती है|

Thank You